पालि
कक्षा–12

कोविड–19 महामारी के कारण शैक्षिक सत्र–2021–22 में समय से विद्यालयों में पठन–पाठन का कार्य न हो पाने की स्थिति में सम्यक विचारोपरान्त विषय विशेषज्ञों की समिति द्वारा निम्नवत् 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किये जाने की अनुशंसा की गयी हैः–

(1) गद्य–

(क) महापरिनिब्बान सुत्तं (भाणवार–6)

(ख) पालि प्रवेशिका (पाठ–24)

(2) पद्य–

(क) धम्मपद– (नागवग्गो)

(ख) चरियापिटक(पाठ–10)

उपर्युक्त के अनुक्रम में 70 प्रतिशत का पाठ्यक्रम निम्नवत् है–

पालि
कक्षा–12

इस विषय में 100 अंकों का केवल एक प्रश्न–पत्र 3 घण्टे का होगा।

(1) गद्य– 15+15=30

(क) महापरिनिब्बान सुत्तं (भाणवार 4 से 5)

(ख) पालि प्रवेशिका (पाठ 19 से 23)

(2) पद्य– 15+15=30

(क) धम्मपद (धम्मट्ठवग्गो, मग्गवग्गो, पकिण्णवग्गो)

(ख) चरियापिटक (दान पारमिता के अन्तर्गत 6 से 9 चरिया)

(3) व्याकरण, निबन्ध तथा अनुवाद 10+10+10=30

(i) व्याकरण–– 10 अंक

(क) निम्नांकित संज्ञाओं तथा उनके अनुरूप अन्य शब्दों के रूप

[1] पुल्लिंग––मुनि, भिक्खु

[2] स्त्रीलिंग––इत्थी

[3] नपुंसकलिंग––अट्ठि, आयु

(ख) धातु रूप––वर्तमान, भूत, अनागत काल में निम्नलिखित धातुओं के रूप–
पठ, गम, रक्ख, पच, नम, बुध, सक, लिख, भुज, कथ, पूज।

(ग) सन्धियाँ––निम्नलिखित सूत्रों पर आधारित होंगी, परन्तु सूत्रों को कंठस्थ करना आवश्यक नहीं है।

[1] स्वर सन्धि––(यवा सरे)

[2] व्यंजन सन्धि––(सरम्हा ह्वे)

[3] निग्गहीत सन्धि––(लोपो, वग्गो वग्गन्तो)

(घ) समास––निम्नलिखित समासों की सामान्य परिभाषा तथा उदाहरण :

[1] बहुब्रीहि समास [2] द्वन्द्व समास।

(ii) निबन्ध––पालि भाषा में संक्षिप्त निबन्ध (सरल सात वाक्यों में) 10 अंक
भगवाबुद्धो, कुसिनारा, राजा असोको, बोधगया।

अथवा

(iii) अनुवाद––हिन्दी वाक्यों का पालि में रूपान्तर

(अनुवाद का उद्देश्य छात्र/छात्राओं को पालि भाषा में वाक्य रचना एवं पालि भाषा के संगठन/पद्धति से परिचित कराना है)। 10 अंक

(4) पालि साहित्य का इतिहास–(द्वितीय बौद्ध संगीति, तृतीय बौद्ध संगीति, विनय पिटक, अभिधम्म पिटक का सामान्य परिचय। 10 अंक

नोट :––अनुवाद के लिये कोई पाठ्य–पुस्तक निर्धारित नहीं है।

निर्धारित पाठ्य–पुस्तकें

(1) महापरिनिब्बान सुत्तं, सम्पादक– भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिडेट, कबीर चौरा, वाराणसी।

(2) पालि प्रवेशिका, संकलनकर्ता– डॉ कोमलचन्द्र जैन, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी।
(3) धम्मपद, सम्पादक– भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक महाबोधि सभा, सारनाथ, वाराणसी।
(4) चरियापिटक, अनुवाद–भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक मास्टर खेलाड़ीलाल संकटा प्रसाद, वाराणसी
(5) पालि व्याकरण, लेखक–भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिडेट, कबीर चौरा, वाराणसी।
(6) पालि महाव्याकरण, लेखक– भिक्षु जगदीश कश्यप, प्रकाशक महाबोधि सोसायटी सारनाथ, वाराणसी।
(7) पालि साहित्य का इतिहास, लेखक– भिक्षु धर्मरक्षित, प्रकाशक ज्ञान मण्डल लिमिटेड कबीर चौरा, वाराणसी।
(8) मैनुअल ऑफ पालि, लेखक–सी0एस0जोशी, प्रकाशक ओरियन्टल बुक एजेन्सी, पूना।